जयसमन्द झील की अति मनोहारी संपूर्ण दृश्यावली

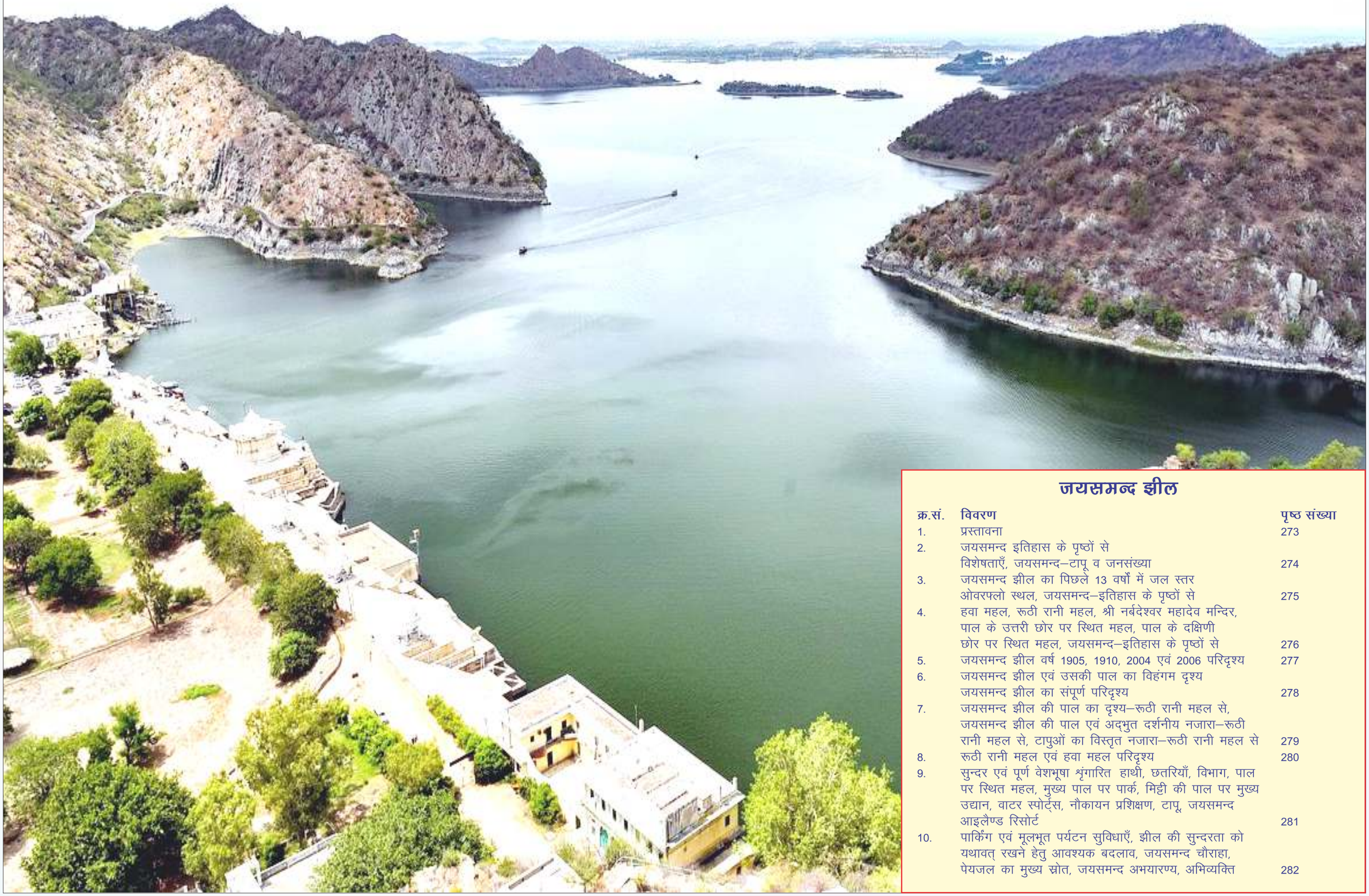

जयसमन्द झील

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	प्रस्तावना	273
2.	जयसमन्द इतिहास के पृष्ठों से विशेषताएँ, जयसमन्द–टापू व जनसंख्या	274
3.	जयसमन्द झील का पिछले 13 वर्षों में जल स्तर ओवरफ्लो स्थल, जयसमन्द–इतिहास के पृष्ठों से	275
4.	हवा महल, रूठी रानी महल, श्री नर्बदेश्वर महादेव मन्दिर, पाल के उत्तरी छोर पर स्थित महल, पाल के दक्षिणी छोर पर स्थित महल, जयसमन्द–इतिहास के पृष्ठों से	276
5.	जयसमन्द झील वर्ष 1905, 1910, 2004 एवं 2006 परिदृश्य	277
6.	जयसमन्द झील एवं उसकी पाल का विहंगम दृश्य जयसमन्द झील का संपूर्ण परिदृश्य	278
7.	जयसमन्द झील की पाल का दृश्य–रूठी रानी महल से, जयसमन्द झील की पाल एवं अद्भुत दर्शनीय नजारा–रूठी रानी महल से, टापुओं का विस्तृत नजारा–रूठी रानी महल से	279
8.	रूठी रानी महल एवं हवा महल परिदृश्य	280
9.	सुन्दर एवं पूर्ण वेशभूषा श्रृंगारित हाथी, छतरियाँ, विभाग, पाल पर स्थित महल, मुख्य पाल पर पार्क, मिट्टी की पाल पर मुख्य उद्यान, वाटर स्पोर्ट्स, नौकायन प्रशिक्षण, टापू, जयसमन्द आइलैण्ड रिसोर्ट	281
10.	पार्किंग एवं मूलभूत पर्यटन सुविधाएँ, झील की सुन्दरता को यथावत् रखने हेतु आवश्यक बदलाव, जयसमन्द चौराहा, पेयजल का मुख्य स्रोत, जयसमन्द अभयारण्य, अभिव्यक्ति	282

जयसमन्द झील

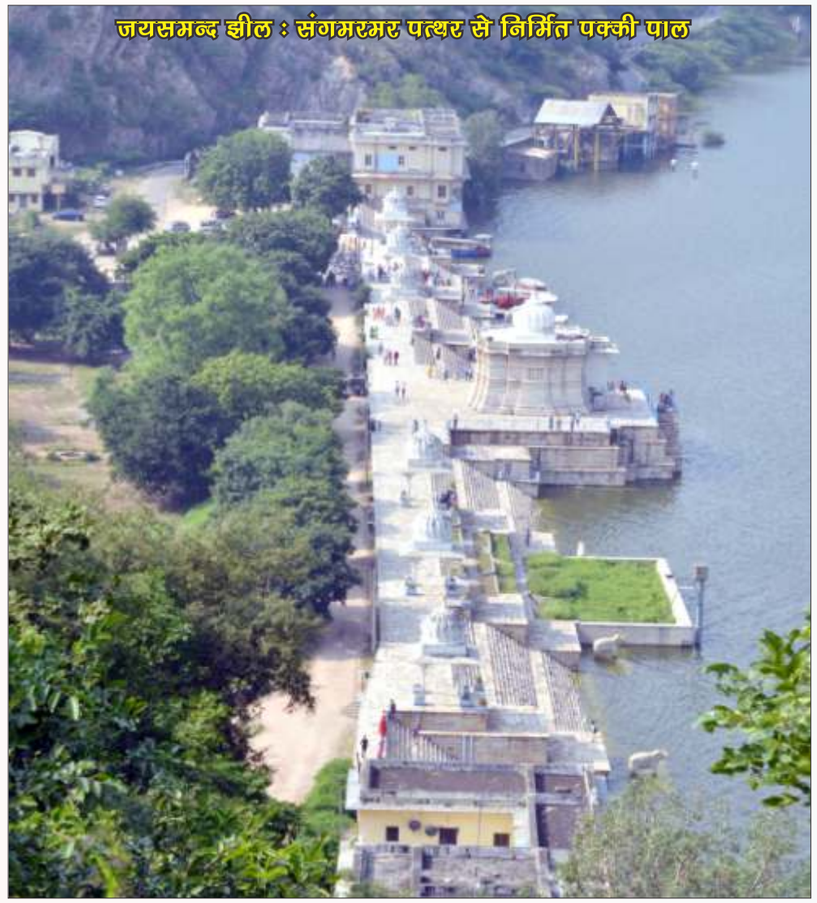
जयसमन्द झील : संगमरमर पत्थर से निर्मित पक्की पाल

प्रस्तावना : यह राजस्थान की सबसे बड़ी एवं एशिया की दूसरी मीठे पानी की मानव निर्मित एवं ऐतिहासिक झील है। यह उदयपुर जिले की सराड़ा तहसील में उदयपुर–बांसवाड़ा मार्ग पर उदयपुर शहर से 52 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। महाराणा जयसिंह ने ई.सं. 1687 (वि.सं. 1744) में मेवाड़ के मगरा जिले में दो ऊँची–ऊँची पहाड़ियों के बीच गोमती नदी जो कि सोम नदी की सहायक नदी है, को बाँधकर सफेद संगमरमर से बाँध निर्मित किया था। तत्पश्चात् उन्हीं के नाम से यह झील भी पुकारी गयी। यह ढेबर झील के नाम से भी जानी जाती है। मान्यता यह है कि इसे बनवाने का सुझाव ढ़ीबा डांगी नाम के किसी ग्वाले ने दिया था। यह झील ऊपर से देखने पर ढेबर (उभरी हुई) दिखती है। इसका निर्माण मुख्यतया मनोरंजन एवं घने जंगलों में रहने वाले जानवरों की सुरक्षा हेतु करवाया गया था।

झील की पक्की पाल की कुल लम्बाई 335.40 मीटर तथा चौड़ाई 21 मीटर है। नदी तल से बाँध की ऊँचाई 35 मीटर है। झील की पाल अपस्ट्रीम एवं डाउनस्ट्रीम में पत्थरों की दीवार बनाकर बीच में उसकी मजबूती के लिए मिट्टी भरकर निर्मित की गयी तथा ऊपर से इसकी कुल लम्बाई 335–360 मीटर एवं चौड़ाई 94–100 मीटर है। बाँध का सील लेवल से ऊपर कुल गेज 27.50 फीट (8.38 मीटर) तथा सील के नीचे करीबन 70 फीट (21.34 मीटर) की गहराई तक डेड स्टोरेज है। झील का फैलाव 52.60

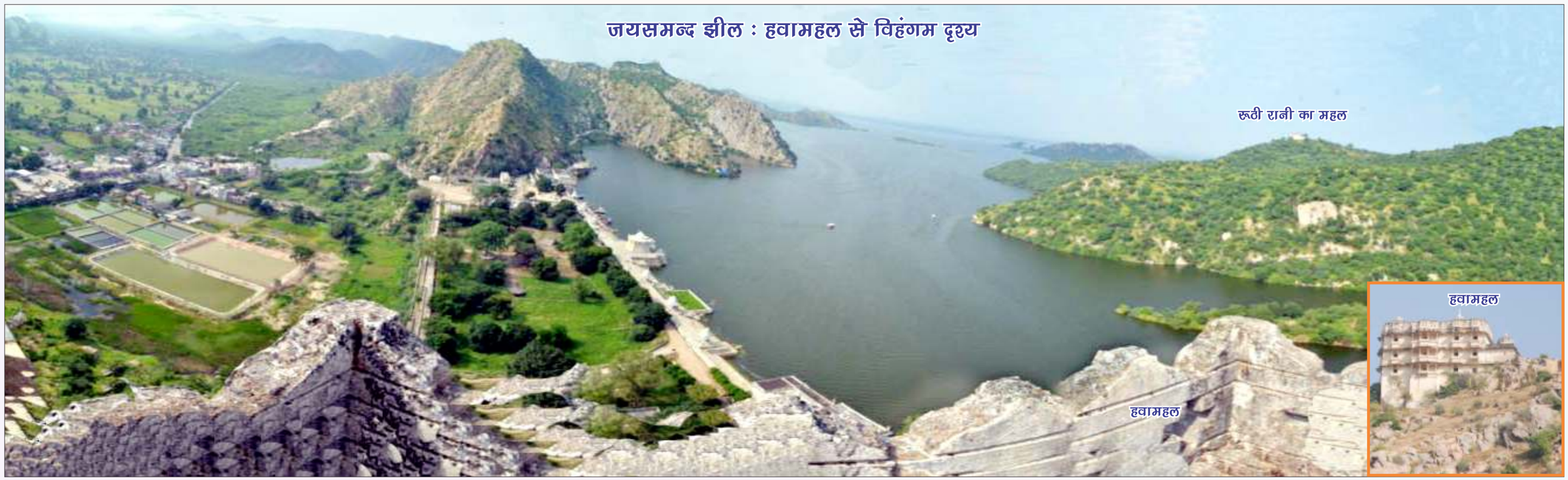

जयसमन्द झील : उपग्रह चित्र – मुख्य नदियाँ एवं टापू

वर्ग कि.मी. है। गोमती एवं इसकी सहायक नदियाँ–झामरी, रूपारेल, वगरूआ, सुकली, घोड़ी, मकेरी, खेरती, थावरिया आदि का अपवाह तंत्र इसे भरता है। यह कहावत भी प्रसिद्ध है कि इस झील में नौ नदियाँ एवं निन्यानवें नालों का पानी मिलता है। झील के इर्द–गिर्द 124 ग्राम स्थित हैं। इसमें अथाह जलराशि के अलावा एक बड़ा आकर्षण है – अरावली की घनी वादियों के बीच वन्यजीव अभयारण्य। करीब 100 प्रजातियों की मछलियाँ यहां पायी जाती हैं, यानी कुदरत की खूबसूरती, जंगल का रोमांच और उदयपुर के पर्यटन का आधार। यहाँ पर प्रतिवर्ष 2 लाख से अधिक पर्यटक भ्रमण पर आते हैं।

झील में कुल 11 द्वीप हैं, जिनका क्षेत्रफल 10 से 40 एकड़ (4.04 से 16.19 हेक्टेयर) है। इनमें से सात द्वीपों में भील एवं मीणा जनजाति के लोग निवास करते हैं। इनमें सबसे बड़ा द्वीप "बाबा मगरा" व सबसे छोटा द्वीप "प्यारी द्वीप" के नाम से जाने जाते हैं। वर्तमान में 3 बड़े द्वीपों को मिलाकर निजी क्षेत्र में अति उच्च सुविधाओं से युक्त "जयसमन्द द्वीप रिसोर्ट" बनाया गया है। झील की दक्षिणी पहाड़ियों पर दो महल हवामहल एवं रूठी रानी का महल स्थित है, जहाँ से झील की विशालता को देखा जा सकता है। झील की पाल पर कलात्मक संगमरमर की छतरियाँ व चबूतरे (चौकियाँ) बने हुए हैं जिनके मध्य में शिव मन्दिर स्थित है। पाल पर कुल 24 चौकियों में से पानी की तरफ नीचे की छह चौकियों पर सफेद संगमरमर पत्थर से बनाये गये मध्यम कद के हाथी जिनमें से दो मन्दिर की ओर एवं शेष चार जल सतह की ओर वन्दनीय मुद्रा में स्थापित हैं। हाथियों पर संगमरमर से बनी कलात्मक श्रृंगारिक बनावट पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। पाल के पार्श्व भाग के तटबंध पर दोनों तरफ सुन्दर महल (दरीखाने) बनाये गये थे।

जयसमन्द : टापू व जनसंख्या

नाम	जनसंख्या
भैंसों का नामला	60
भटवाड़ा	45
बाबा मंगरा	150
भागल मंगरी	98
मिदोड़ा मंगरा	45
पायरी टापू	110
भील बस्ती टापू	150
कुल जनसंख्या	**658**

विशेषताएँ

- यह विशाल झील ऐतिहासिक एवं पुरातत्व महत्व के साथ विविध वनस्पतियों युक्त पहाड़ियों से घिरी हुई है।
- संगमरमर निर्मित विशाल कलात्मक पाल, छतरियाँ और मन्दिर पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।
- प्रदूषण एवं गन्दगी मुक्त स्वच्छ मीठा जल एवं जलीय जीवों की बहुतायत इसकी विशेषता है।
- यह झील उदयपुर शहर के पेयजल का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। भविष्य में इस झील से और अधिक पेयजल प्राप्त करने की संभावना रहेगी।

वर्तमान में पर्यटन की दृष्टि से इस झील का अत्यन्त महत्व है। इस झील के पानी का उपयोग सिंचाई एवं पेयजल के रूप में किया जा रहा है। आज यह झील उदयपुर शहर के पेयजल का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी है। इस झील से दो नहरें श्याम नहर एवं भाट नहर निकलती हैं, जिनकी लम्बाई 73.95 कि.मी. एवं सहायक नहरों की कुल लम्बाई 324 कि.मी. है। इन नहरों के द्वारा 400 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैले हुए 16500 हेक्टयर क्षेत्र में सिंचाई की जाती है। झील के पास उत्तरी क्षेत्र में वन विभाग द्वारा जयसमन्द वन्य जीव अभयारण्य विकसित है। बाँध की कुल भराव क्षमता 14650 एमसीएफटी (414.60 मिलियन घनमीटर), उपयोगी भराव क्षमता 10464 एमसीएफटी (296.14 मिलियन घनमीटर) एवं अनुपयोगी भराव क्षमता 4186 एमसीएफटी (118.46 मिलियन घनमीटर) है। उपलब्ध रिकॉर्ड के अनुसार इस झील में 7 सितम्बर, 1973 को अधिकतम् जल स्तर 995.50 फीट (303.43 मीटर) रिकॉर्ड किया गया जो कि पाल के उच्चतम् स्तर 305.10 मीटर से सिर्फ 1.21 मीटर (4 फीट) नीचे था। उस समय इसके टूटने का भी अंदेशा लगने लगा था। इन वर्षों में, वर्ष 2006 में अधिकतम् 6.5 फीट ओवरफ्लो चला। इस झील में न्यूनतम् जल स्तर वर्ष 2009 के दौरान (–) 2.30 फीट दर्ज किया गया। गत 29 वर्षों में वर्ष 1990, 1991, 2006, 2016, 2017, 2019, 2020 एवं 2022 में पूरी भराव क्षमता से पानी आया एवं मात्र 8 बार ही यह झील ओवरफ्लो हुई। पाल पर स्थापित सफेद संगमरमर पत्थर के हाथी के पांव तक पानी आते ही 299.47 मीटर (गेज 27.5 फीट) झील का ओवरफ्लो प्रारम्भ हो जाता है। जयसमन्द झील औसतन 4 वर्षों में एक बार छलकती है। इस प्रकार 9 नदियों एवं 99 नालों से जो पानी आता है, वह इस झील के लिए पर्याप्त नहीं है, इसलिए किसी अन्य स्रोत जहां जल की अधिकता हो, यथा–माही केचमेन्ट आदि से इस झील में पानी लाने के प्रयास होने चाहिये।

जयसमन्द झील	
स्थिति	उदयपुर से दक्षिणी तरफ
निकटस्थ गांव/तहसील/शहर	वीरपुरा, तह.सराड़ा
देशान्तर	73° 57′10″ पूर्वी देशान्तर
अक्षांश	24° 14′30″ उत्तरी अक्षांश
नदी/नाला	गोमती (सोम नदी की सहायक)
मुख्य बहाव क्षेत्र	माही बेसिन
निर्माण समाप्ति वर्ष	1730
बाँध का प्रकार	चिनाई बाँध (दोनों तरफ दीवार)
शुद्ध जलग्रहण क्षेत्र	1652 वर्ग किलोमीटर
सकल जलग्रहण क्षेत्र	1813 वर्ग किलोमीटर
औसत वार्षिक जल आवक	64.22 एमसीएम
सकल जल भराव क्षमता	414.42 एमसीएम
शुद्ध जल भराव क्षमता	296.02 एमसीएम
पूर्ण जलाशय स्तर	295.47 मीटर
अधिकतम् जल स्तर	301.10 मीटर
टैंक बंध स्तर	303.10 मीटर
पूर्ण टैंक गेज	8.38 मीटर/27.49 फीट
स्तर – जीटीएस/आर्बिटरी	जीटीएस
पाल की लम्बाई	335–360 मीटर
पाल की चौड़ाई	94–100 मीटर
सतही क्षेत्रफल	52.60 वर्ग कि.मी.
औसत गहराई	21.34 मीटर
अधिकतम् गहराई	42.06 मीटर
टापू	11
समुद्रतल से ऊँचाई	306.76 मीटर
अधिशेष जल निकास व्यवस्था :	
– डिजाइन अधिकतम् प्रवाह	5402.85 क्यूमेक
– वीयर का प्रकार व लम्बाई	(1) 2 गेट साईज 35 x 5.49 मी. (2) ब्रोड क्रिस्टेड वियर – 45 मी (3) बाय वॉश 18 मी.
बायीं मुख्य नहर	51.09 कि.मी.
दायीं मुख्य नहर	22.86 कि.मी.
सिंचाई क्षमता	16500 हेक्टयर

स्रोत : जल संसाधन विभाग, राजसमन्द

जयसमन्द – इतिहास के पृष्ठों से ...

उदयपुर से 50 कि.मी. दक्षिण में 24° 13′ और 24° 18′ उत्तरी अक्षांश और 73° 56′ और 74° 3′ पूर्वी देशान्तर पर प्रसिद्ध जयसमुद्र तालाब स्थित है। 17वीं शताब्दी में महाराणा जयसिंहजी (1680–1698 ई.सं.) के काल में निर्मित इस तालाब को 'ढेबर झील' भी कहा जाता है। यह समुद्र सतह से 969 फीट ऊंचा है, इसमें 690 मील मुरब्बे की जल आवक है तथा इसकी जल भराव क्षमता 20 अरब क्यूबिक फीट है और यह 9 मील लम्बा, 6 मील चौड़ा और 102 फीट गहरा है। इसका 21 मील मुरब्बा है। इसके किनारे पश्चिम की तरफ की पहाड़ियाँ 800 से 1000 फीट ऊंची हैं। यहाँ छोटे–छोटे वृक्ष वाले टापू हैं जो इस तालाब की खूबसूरती को बढ़ाते हैं।

महाराणा जयसिंहजी ने वि.सं. 1744 (ई.सं. 1687) में मेवाड़ के मगरा जिले में दो ऊँची–ऊँची पहाड़ियों के बीच गोमती नदी को बाँधकर इस विशाल मीठे पानी के समुद्र को बनवाना प्रारम्भ किया। वि. सं. 1748 (ई.सं. 1691) में इस तालाब की पाल बनकर तैयार हुई तथा इसी वर्ष की ज्येष्ठ शुक्ल 5 (ता. 2 जून) को इसकी प्रतिष्ठा हुई। इस समय महाराणा जयसिंहजी ने स्वर्ण तुलादान किया तथा उन्हीं के नाम से यह जयसमुद्र कहलाता है।

जयसमन्द की पानी की ओर की पाल 1252 फीट लम्बी और 116 फीट ऊँची, इसकी नीचे से चौड़ाई 70 फीट और सिरे पर 16 फीट है। इसका सुदृढ़ बाँध सफेद सुभाजा पत्थर का बना है। इस बाँध का स्थापत्य भी अपने ढंग का विशिष्ट है। यह बाँध उत्तर से दक्षिण की तरफ लम्बाई में निर्मित है तथा इसकी लम्बाई के मध्य में बाँध के सबसे ऊपर के परिध पर भगवान शिव को समर्पित नर्मदेश्वर नामक एक छाद्य–प्रासाद बना हुआ था। उसे महाराणा फतहसिंहजी ने पूर्ण कर शिवलिंग स्थापन किया। इसके दोनों तरफ समान लम्बाई के भाग को छोड़कर तीन–तीन गुम्बदाकार स्तंभाश्रित वितानों वाले मण्डप बने हुए हैं। ये मण्डप समाधि छतरियों के आकार के हैं। इस प्रकार बांध या पाल के ऊपरी भाग पर कुल छह छतरियाँ और एक प्रासाद दृष्टव्य है। पाल पर बनी प्रत्येक छतरी से आगे नीचे उतरते हुए छतरियों की चौकियों या परिध को छोड़कर एक के बाद एक तीन परिध या चौकियाँ बनी हैं और इस प्रकार बांध की पूरी लम्बाई में 24 चौकियाँ दृष्टव्य हैं। ..... लगातार

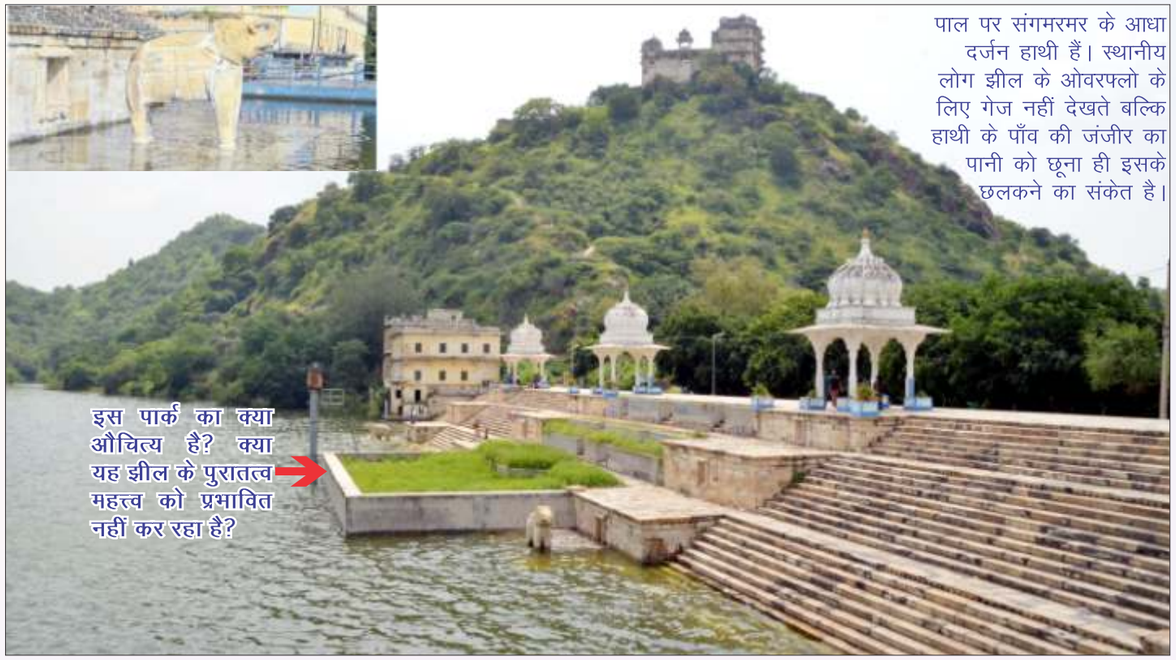

ओवरफ्लो स्थल : जयसमन्द का ओवरफ्लो तीन स्थानों से होता है – पहला ओवरफ्लो मच्छी काँटा जयसमन्द से करीब 7 कि.मी. दूर, दूसरा थर्मल नाका जयसमन्द से करीब 7.30 कि.मी. दूर एवं तीसरा भैंसों का नामला जयसमन्द से करीब 10–12 कि.मी. दूर गांव के मध्य स्थित है।

जयसमन्द – इतिहास के पृष्ठों से ...

इन 24 चौकियों में से पानी के तरफ की सबसे नीचे की छह चौकियों पर सफेद संगमरमर पत्थर से बनाये गए मध्यम कद के छह हाथी खड़े किए गए हैं। ये हाथी शारीरिक संरचना की दृष्टि से सत्रहवीं शताब्दी की मेवाड़ की मूर्तिकला के अनोखे उदाहरण हैं।

इस बांध को मजबूत बनाने के लिए मुख्य बांध से 100 गज पीछे पश्चिम में एक दूसरी पाल बनवायी गयी थी जो 1300 फीट लम्बी और 100 फीट ऊँची, नीचे से 35 फीट और सिरे पर 12 फीट चौड़ी है। पहले इन दोनों पालों के मध्य बहुत बड़ा खड्डा था। वि.सं. 1932 (ई.सं. 1875) में जब अतिवृष्टि हुई और तालाब इतना भर गया कि पाल सिर्फ 3 गज ही खाली रही, उस समय गुजरात के निवासियों ने बांध के टूटने की स्थिति में उन्हें होने वाली हानि से बचाने हेतु महाराणा सज्जनसिंहजी से इस पाल को पुख्ता मजबूत करवाने की अर्ज करवायी। इस पर उन्होंने इन दोनों पालों के बीच मिट्टी भरवाने और पाल के दक्षिणी पहाड़ के महलों की दुरस्ती का हुक्म दिया। तदनुसार महलों की मरम्मत हुई और दोनों पालों के मध्य की खाई में मिट्टी, पत्थर, चूना इत्यादि भरवाना प्रारम्भ किया, इसी दौरान उनका देहान्त हो गया और तत्पश्चात् महाराणा फतहसिंहजी ने इस शेष रहे कार्य को कुशलतापूर्वक पूर्ण करवाया। इस प्रकार बाँध की दो दीवारें बनाना एवं उनके बीच की पर्याप्त चौड़ाई वाली जगह में मिट्टी, पत्थर इत्यादि भरवाकर बाँध को पूरा मजबूत बनवाने की सत्रहवीं शताब्दी के मेवाड़ के स्थापत्यों की यह तकनीक अनुकरणीय है।

महाराणा जयसिंहजी ने इस तालाब के साथ ही पाल के दक्षिणी पहाड़ पर एक महल बनवाया, जिसे गढ़ भी कहते हैं तथा पाल के सामने पूर्व की तरफ की पहाड़ी पर तालाब की सैर करने के लिए एक और महल बनवाया जिसे रूठी रानी महल के नाम से जाना जाता है। एक महल पाल के सामने ही पानी में निकली हुई मगरी पर भी बनवाया जिसमें बगीचे, फव्वारें, हौज व मकान थे। ..... लगातार

Highest Gauge Achieved by Jaisamand Lake		
Year	Achieved Gauge [in RL (ft.)]	Achieved Gauge [in RL (m.)]
1990	27.49	8.38
1991	27.49	8.38
1992	19.95	6.08
1993	17.55	5.35
1994	B.S.	B.S.
1995	B.S.	B.S.
1996	B.S.	B.S.
1997	B.S.	B.S.
1998	B.S.	B.S.
1999	B.S.	B.S.
2000	B.S.	B.S.
2001	B.S.	B.S.
2002	B.S.	B.S.
2003	22.31	6.80
2004	9.78	2.98
2005	19.69	6.00
2006	33.99	10.36
2007	19.19	5.85
2008	7.02	2.14
2009	-2.30	-0.70
2010	-2.20	-0.67
2011	21.33	6.50
2012	17.22	5.25
2013	9.84	3.00
2014	18.37	5.60
2015	16.40	5.00
2016	27.59	8.41
2017	27.49	8.38
2018	19.42	5.92
2019	27.59	8.41
2020	27.49	8.38
2021	21.26	6.48
2022	27.49	8.38
Maximum Gauge (in meters) : 8.38		

ओवरफ्लो स्थल–1 (2 Gate of Size 3.05 x 5.49)

ओवरफ्लो स्थल–2 (Broad Crested Weir 45m.)

ओवरफ्लो स्थल–3 (Bye Wash 19.8m.)

जयसमन्द झील का पानी तीन स्थानों मच्छी कांटा, थर्मल नाका व भैंसों का नामला से ओवरफ्लो होता है। ओवरफ्लो होने के बाद इसका पानी जयसमन्द के निचले इलाके गोमती और टीडी नदी के संगम पर गोपेश्वर महादेव के यहाँ पर मिलता है। यहाँ से पानी रठौड़ा के निकट सोम नदी में मिलकर सोम कमला आम्बा बाँध में समाहित होता है। तत्पश्चात् **सोम बेणेश्वर त्रिवेणी संगम** से गलियाकोट के पास गुजरात के कड़ाना बाँध तक पहुंचता है। इससे आगे जाकर यह गुजरात के रास्ते समुद्र में समाहित हो जाता है।

झील के ओवरफ्लो होने के साथ ही इसके केचमेंट एरिया में मैथूरी पंचायत के पाथरी, भैंसों का नामला, सेमाला पंचायत के मिदोंडा व बाबा मगरा गांव टापू बन जाते हैं। इन गांवों को सड़क मार्ग से जोड़ना आज की प्राथमिकता होनी चाहिये। इसके अतिरिक्त इसके केचमेंट क्षेत्र के मैथुड़ी, पालन, झीलों की बस्ती, कुआं, समाल, पानी कोटड़ा, गींगला, सराड़ी, ढोलकाकर, तुलसियों का नामला, खेराड़ आदि क्षेत्र झील के किनारे बसे हुए हैं। इस क्षेत्र के खेत पानी में डूब जाते हैं जिससे फसलें तबाह हो जाती हैं। झील का नियमित पूर्ण भराव नहीं होने से झील भराव क्षेत्र में गांव बसते गये, खेती होने लगी, वर्षों के बाद भराव होने से मानवीय तकलीफ होना, फसलों का चौपट होना, चारे का संकट उत्पन्न होना स्वाभाविक है।

सोम बेणेश्वर त्रिवेणी संगम

जयसमन्द झील : संगमरमर की पाल एवं हवामहल का विशाल पर्यटकीय स्वरूप

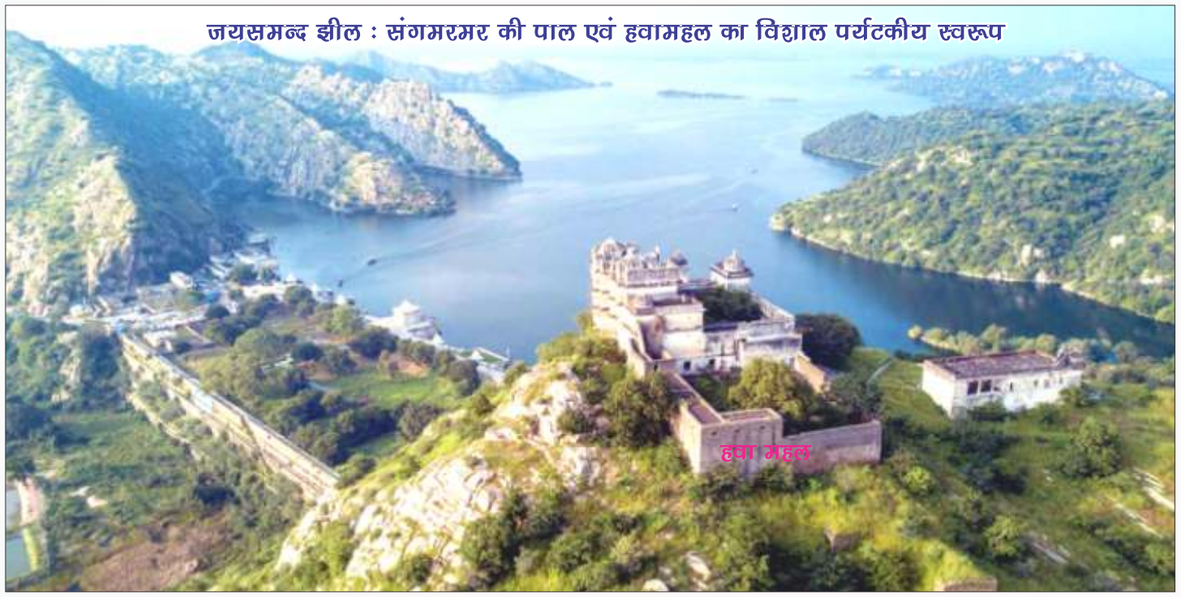

जयसमन्द के साथ जय नगर (जसनगर), जय मन्दिर (वर्तमान हवा महल), जयेश्वर (नर्बदेश्वर) महादेव मन्दिर एवं रूठी रानी महल (पूर्व हवा महल) का निर्माण महाराणा जयसिंह ने करवाया एवं एक साथ प्रतिष्ठित किये गये थे। कुछ कार्य महाराणा सज्जन सिंह और महाराणा फतहसिंह के समय में भी हुआ। हवामहल के निर्माण का उद्देश्य सिर्फ जयसमन्द झील की खूबसूरती ऊपर से देखने और झील की प्रतिष्ठा की याद को ताजा रखने के लिए किया गया था। पूर्व में इस महल को गढ़, तोरण एवं फेरणये के महलों के नाम से जाना जाता था, बाद में इसका नाम बदलकर हवा महल कर दिया गया। झील से लगी पहाड़ियों पर बने हवा महल व रूठी रानी महल एवं उनकी छतों से विशाल झील, चारों ओर फैले गहन जंगल के मनोहारी दृश्य बेमिसाल थे एवं वर्तमान में भी हैं।

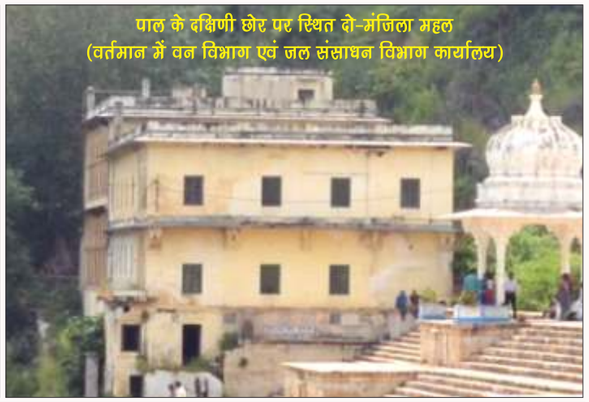

पाल के सामने ऊँची पहाड़ी पर सघन वन में स्थित 'रूठी रानी महल' एवं किनारे पर जयनगर के भग्नावशेष

पाल के दक्षिणी छोर की ऊँची पहाड़ी पर स्थित 'हवा महल'

पाल के सामने ऊँची पहाड़ी स्थित 'रूठी रानी महल'

पाल के मध्य भगवान शिव को समर्पित श्री नर्बदेश्वर महादेव मन्दिर

जय नगर को महाराणा जय सिंह ने पाल की दक्षिणी छोर के सामने ही पानी से निकली हुई मगरी पर बसाया। वर्तमान में पाल से मात्र खण्डहर ही नजर आते हैं। पुरातत्व महल के जय नगर, हवा महल एवं रूठी रानी महलों के ऐतिहासिक एवं पुरातत्व संरक्षण के नियमों के अनुरूप जीर्णोद्धार, विकास एवं रखरखाव आवश्यक रूप से किया जाना चाहिये। सुगम एवं सुविधायुक्त मार्ग बनाकर पर्यटकों के लिए खोल दिया जाना चाहिये।

जयसमन्द मुख्य पाल के उत्तरी व दक्षिणी छोर पर दो मंजिला महल महाराणा फतहसिंह जी ने अपनी आवासीय व्यवस्था एवं राजकीय प्रबन्धन के लिए बनवाये थे।

जयसमन्द – इतिहास के पृष्ठों से ...

साथ ही जसनगर नाम का शहर बसाया, परन्तु पीछे से वहां न रहने के कारण वह शहर वीरान हो गया और सिर्फ एक गुम्बद ही रह गया, जिसको कचहरी पुकारते थे और यह महल भी बर्बाद हो गया। महाराणा फतहसिंहजी ने सब महलों का जीर्णोद्धार कराया और तालाब की सैर के महलों का नाम हवामहल रखा जिसको पहले फेरणये के महलों के नाम से पुकारते थे। इन महलों को फेरणये के महल इसलिए कहते हैं कि किसी (चावक सवार यानी घोड़ा दौड़ाने वाला) फेरणयां को हुक्म दिया गया था कि इस तालाब की पाल के पीछे जो दूसरी पाल 12 फीट चौड़ी है उस पर घोड़े की खुरी दौड़ावे, उसने उस पाल पर ढाई खुरी घोड़ा दौड़ाया जिस पर महाराणा ने प्रसन्न होकर इनाम देना चाहा। इस पर फेरणयां ने अर्ज करवायी कि सामने के पहाड़ पर एक महल बना दिया जावे और उस महल का नाम फेरणयां का महल रखा जावे, इस अर्ज मुताबिक यह महल बनवाया गया और फेरणयां का महल प्रसिद्ध हुआ।

महाराणा सज्जनसिंह ने तो मगरे जिले का सदर मुकाम भी यहीं कायम किया परन्तु वि.सं. 1937 (ई.सं. 1879) में भीलों का बलवा होने पर सदर वापस सराड़े ही कायम किया गया और भीलों के दमन के लिए भोराई और जावर में गढ़ बनवाये गये और पहाड़ के महलों की मरम्मत करवाकर पाल के नीचे कचहरी के पास एक बाग बनवाया। महाराणा फतहसिंहजी ने पुराने महलों की मरम्मत के अलावा पाल के पश्चिम में 2 मील की दूरी पर ढीमड़ा नामक जगह पर एक बहुत रमणीय बाग और महल बनवाया, जहां सांभरों को दाना डाला जाता था। साथ ही पहाड़ियों में कई जगह शिकारगाह की ओदियां भी बनवाई गई जिनमें कई तो ऐसी थी कि छोटे महल भी कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस तालाब से नहर निकलवाकर किसानों को सिंचाई हेतु पानी उपलब्ध कराया गया।

महाराणा फतहसिंह ने उत्तरी तरफ के दरीखाने पर दोमंजिला महल बनवाया। दक्षिण तरफ छोटा सा दरीखाना था उस पर महाराज कुमार साहब श्री भोपालसिंह ने अपने बिराजने के लिए महल बनवाये। इस महल को इस तर्ज का बनाया गया कि देशी और प्रतिष्ठित यूरोपियन आराम से रह सके। उदयपुर में जो कोई प्रतिष्ठित लोग आते थे तो जयसमुद्र देखे बगैर नहीं जाते थे। महाराणा फतहसिंहजी ने उदयपुर से जयसमुद्र तक मोटर गाड़ियों के लिए पक्की सड़क सुविधाजनक बनवा दी और रास्ते में केवड़ा, पलोदड़ा में अपने रहने के लिए छोटे–छोटे महल भी बनवा दिए थे।

राजसमन्द एवं जयसमन्द की तुलना : जयसमुद्र के बाँध की निर्माण शैली राजसमुद्र के बाँध की निर्माण शैली से सरल है। वैसे एक भद्र का होने तथा ज्येष्ठ बाँध की लम्बाई चौड़ाई का होने से यह तालाब भी उत्तम भद्र संज्ञक तालाब ही है; किन्तु इसकी संरचना एवं राजसमुद्र की संरचना में अन्तर है। राजसमुद्र का बाँध तीन–तीन कुण्डों अर्थात सीढ़ियों के तीन–तीन विभागों का है जबकि जयसमुद्र का बाँध चार–चार कुण्डों का है। जयसमुद्र बाँध की छतरियों के नीचे उतरती हुई एक के बाद दूसरी बनी चौकियाँ समान आकार की हैं तथा छतरियों की चौकियों सहित उनकी संख्या चार–चार हैं, जबकि राजसमुद्र के बाँध पर तीन–तीन चौकियाँ ही हैं और नीचे उतरते हुए एक के बाद दूसरी चौकी विस्तृत होती गयी है। दोनों बाँधों में एक जबरदस्त विषमता यह है कि राजसमुद्र के बाँध पर मण्डप पानी की तरफ सबसे नीचे की चौकियों पर बनाये गए हैं, जबकि जयसमुद्र के बाँध पर मण्डप पानी से दूर के सबसे ऊपर के परिध पर निर्मित हैं। इस प्रकार संरचना तथा स्थापत्य की दृष्टि से राजसमुद्र के बाँध और जयसमुद्र के बाँध में पर्याप्त अन्तर है।

जयसमन्द झील : वर्ष 1905 का स्वरूप जिसमें दक्षिणी छोर पर वर्तमान महल के स्थान पर राजसमन्द की तर्ज पर मण्डप बना हुआ था

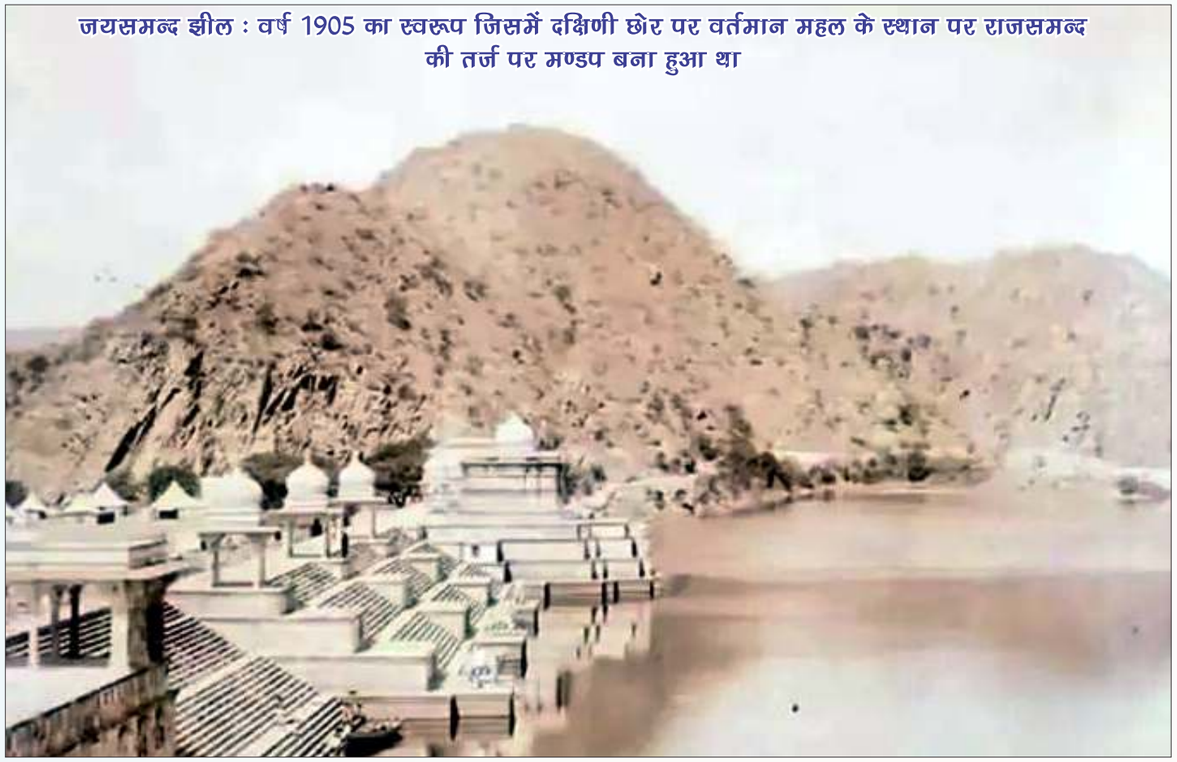

जयसमन्द झील के वर्ष 1905 में लिये गये चित्र पर दृष्टि डाले तो पायेंगे कि पाल पर छतरियों के अतिरिक्त इसके दक्षिणी छोर पर राजसमन्द की तरह एक मण्डप (छतरी) बनी हुई थी। शायद यह भव्य मण्डप दक्षिणी छोर पर बने राजमहल के लिए हटा दी गयी होगी। काशः यह स्वरूप रहने देते तो राजसमन्द एवं जयसमन्द में मण्डप की दृष्टि से एक समानता रहती। पाल के दक्षिणी छोर के मध्य में छतरी के नीचे स्थित पार्क

जयसमन्द झील : वर्ष 1910 का स्वरूप जिसमें पाल के पश्चिमी छोर के तल पर छोटे-छोटे आवास परिलक्षित हो रहे हैं।

शायद बाद में बनाया गया है। पुरातत्व महत्त्व की इस झील के मुख्य स्वरूप को परिवर्तित कर इसकी पाल पर पार्क का निर्माण करना अनावश्यक एवं अनुपयोगी प्रतीत होता है। वर्ष 1910 से लिये गये चित्र में जयसमन्द की पाल के पश्चिमी छोर की मजबूत दीवार के नीचे छोटे–छोटे आवास नजर आते हैं, जो कि शायद राज्य कर्मचारियों एवं सुरक्षाकर्मियों के आवास स्थल रहे होंगे।

जयसमन्द झील का वर्ष 2004 में निम्न जलस्तर पर संपूर्ण पाल एवं पार्क का स्वरूप

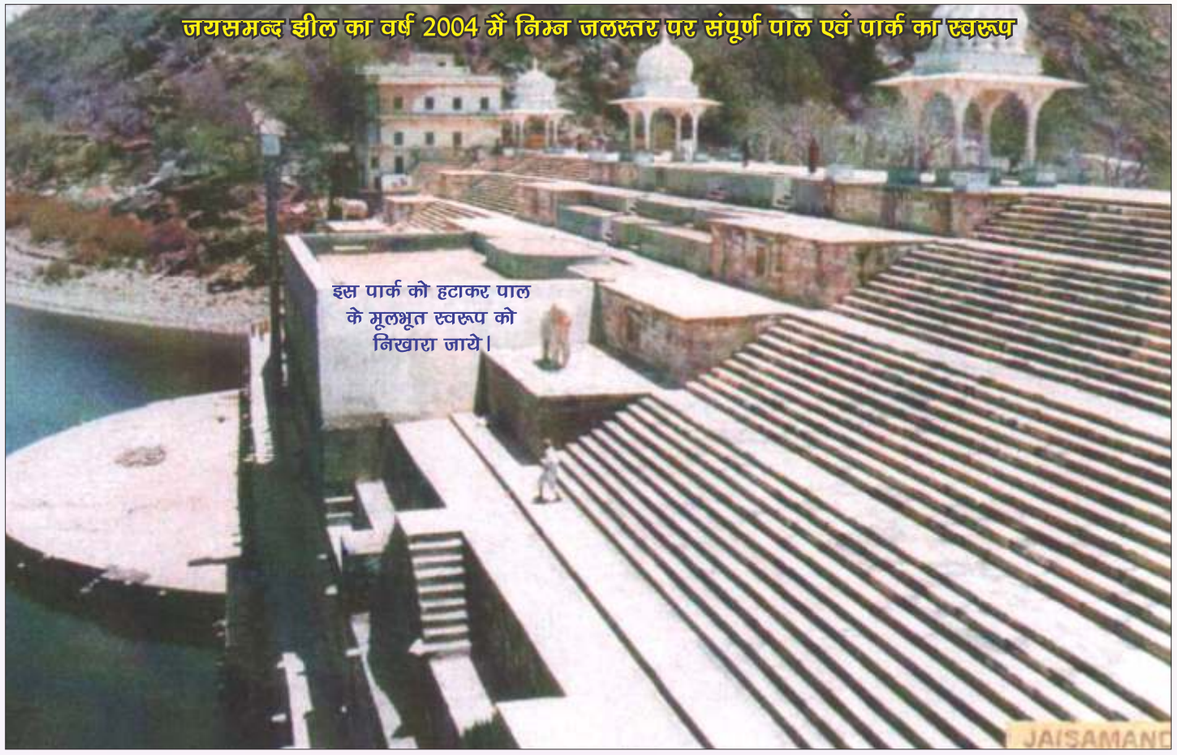

जयसमन्द झील एवं इसकी पाल का विहंगम दृश्य – दक्षिणी छोर स्थित दो मंजिला महल से

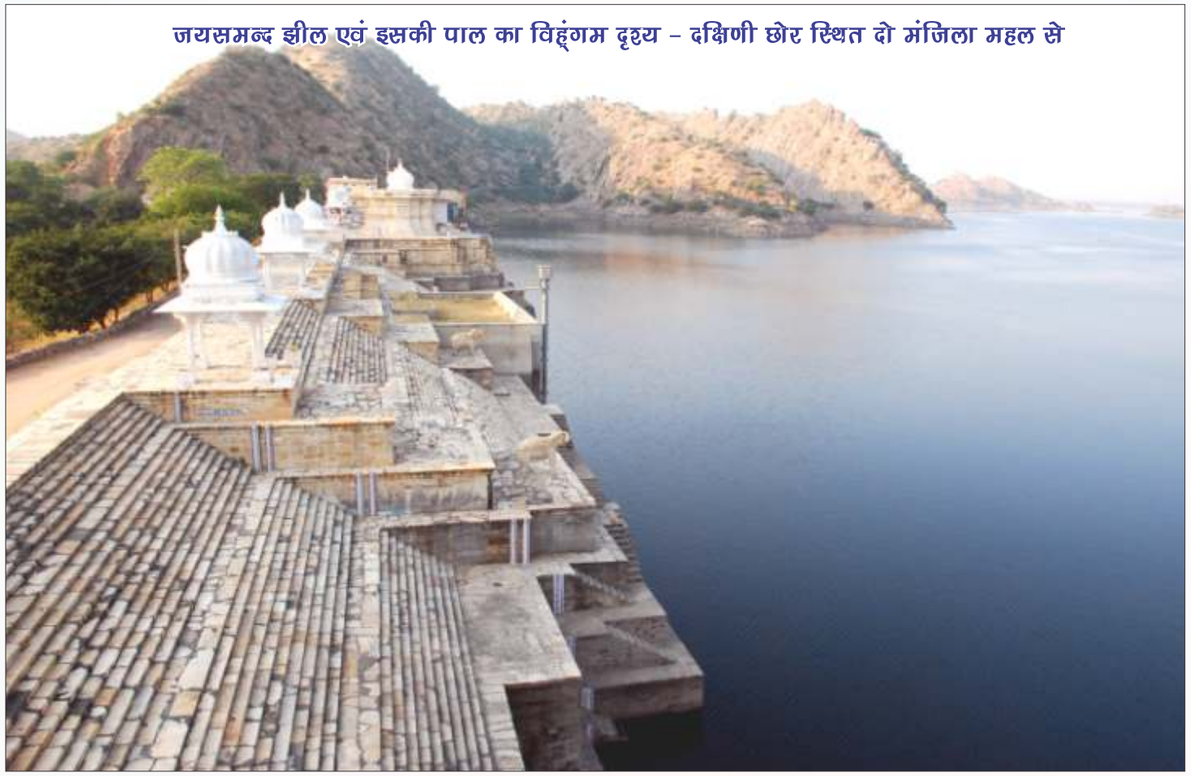

जयसमन्द झील की विशालता – दक्षिणी छोर पर स्थित दो मंजिला महल एवं दरीखाना – हवा महल से

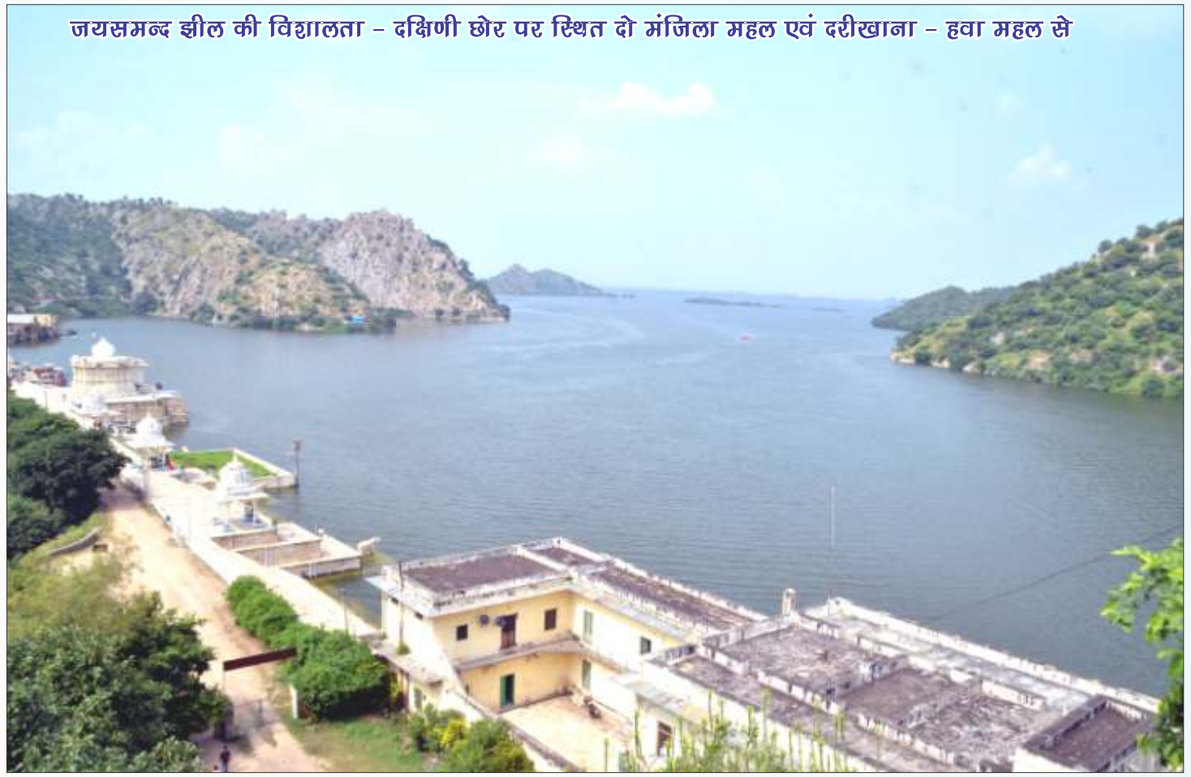

जयसमन्द झील का संपूर्ण परिदृश्य – पाल, रूठी रानी महल, टापू एवं अरावली की सुरम्य पर्वत श्रृंखलाओं पर हरीतिमा के साथ अथाह जलराशि का मनोहारी दृश्यावलोकन

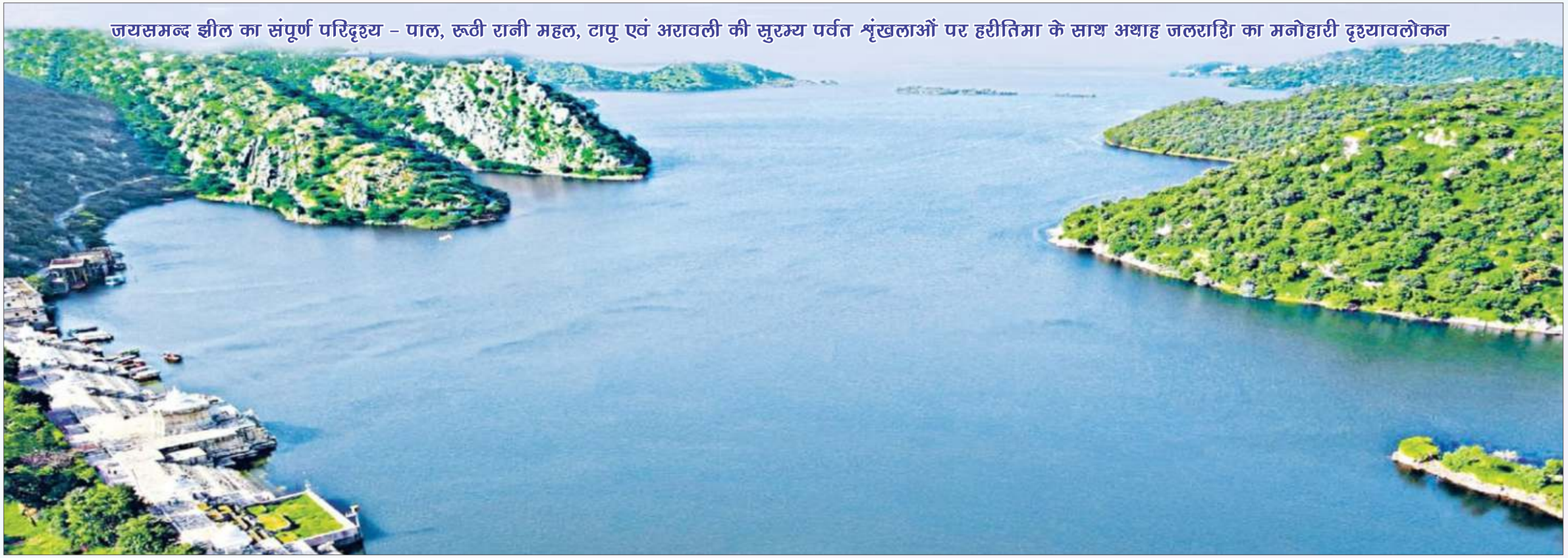

जयसमन्द झील : पाल का दृश्य : रूठी रानी महल से

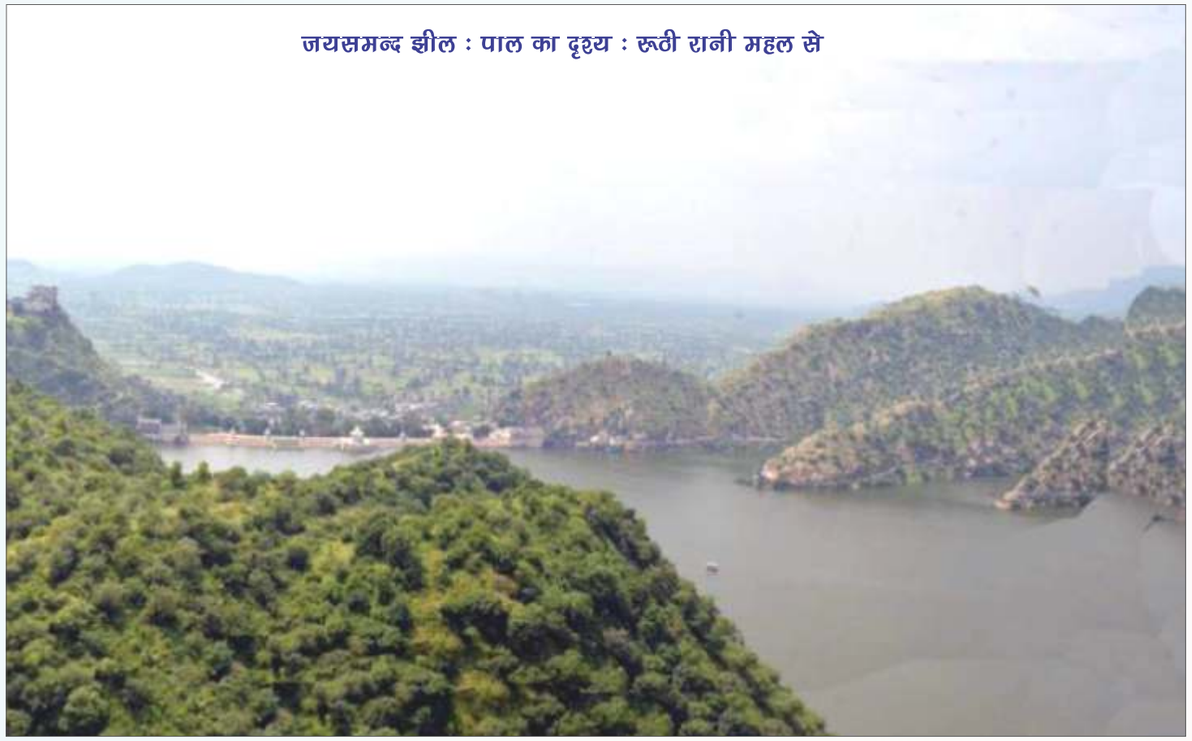

जयसमन्द झील : टापुओं का विस्तृत नजारा : रूठी रानी महल से

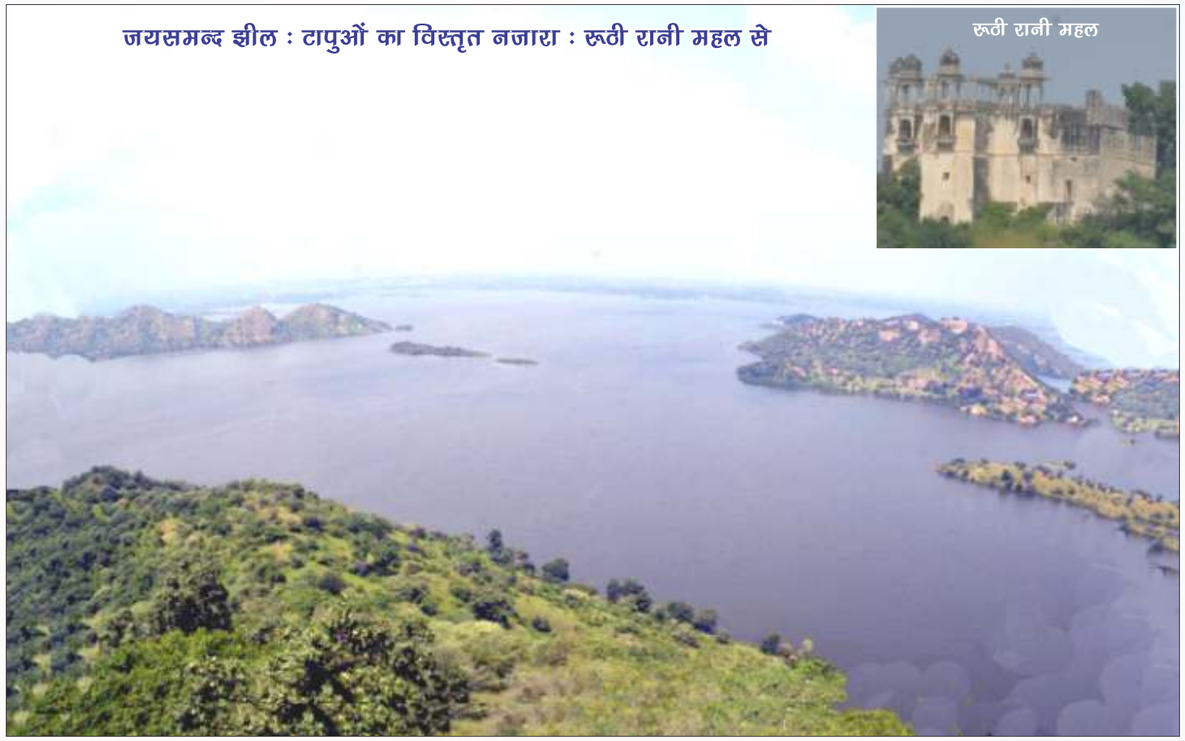

जयसमन्द झील : पाल एवं अद्भुत दर्शनीय नजारा : रूठी रानी महल से

रूठी रानी महल : जयसमन्द पाल के सामने, पूर्व की तरफ ऊँची पहाड़ी पर, घने जंगल के मध्य करीब 2.5 किलोमीटर दूर वीरपुरा में अपनी सबसे छोटी रानी के लिए महाराणा जयसिंह ने एक और महल बनवाया था जो प्रारम्भ में हवा महल के रूप में जाना जाता था। यह महल रूठी रानी के महल के नाम से अधिक लोकप्रिय हुआ क्योंकि रानी किन्हीं कारणों से राजा से नाराज रहने के बाद राजा के महलों को छोड़कर यहाँ रहने लग गई थी। रानी बिजोलिया के पंवार घराने से थी। ऐसा कहा जाता है कि महाराणा से शादी के बाद, प्रथम रात्रि में लम्बे इन्तजार से नाराज होकर, रानी न लौटने की प्रतिज्ञा के साथ हवा महल में रहने के लिए चली गई। तत्पश्चात् यह महल रूठी रानी महल के रूप में पुकारा जाने लगा। 2.5 कि.मी. लम्बी एवं ऊँची चढ़ाई के साथ यह एक अच्छा ट्रेकिंग स्पॉट है। मानसून एवं सर्दियों के दौरान यह महल ट्रेकिंग प्रेमियों के लिए आकर्षण का महत्वपूर्ण केन्द्र है। यह महल उन सभी लोगों को देखना चाहिये जो साहसिक एवं रोमांचकारी गतिविधियों से लगाव रखते हैं।

रूठी रानी महल के ऊँची पहाड़ी पर स्थित होने के कारण संपूर्ण झील एवं उसमें स्थित टापुओं का सिंहावलोकन संभव होता है। इसका विकास पुरातत्व नियमों के तहत किया जाना चाहिये। महल तक सुगमता से पहुँचने के लिए उच्च स्तरीय सीमेन्टेड या पूर्व अनुसार पत्थर का सुव्यवस्थित ट्रेकिंग पाथ बनाया जाना चाहिये। ट्रेकिंग पाथ के दोनों ओर अनेक जातियों के पौधे व्यवस्थित रूप से लगाकर पहचानने के लिए उनको टेग किये जाने चाहिये। वर्ष 2018 में इस पर्यटन स्थल तक जाना कठिन ही नहीं पूर्णतः जोखिमपूर्ण भी था।

रूठी रानी महल

रूठी रानी महल परिसर

हवा महल : महाराणा जयसिंह ने जयसमन्द झील के साथ पाल के दक्षिणी पहाड़ पर करीब 1.5 किलोमीटर की चढ़ाई पर एक महल बनवाया जिसे फेरणये के महल, गढ़, तोरण के नाम से जाना जाता था। महाराणा फतहसिंह जी ने इस महल का नाम हवामहल रखा। इतिहासकारों के अनुसार हवा महल के निर्माण का उद्देश्य सिर्फ जयसमन्द झील की खूबसूरती ऊपर से देखने और झील की प्रतिष्ठा की याद को ताजा रखने के लिए किया गया था। यह महल वर्ष 2004–05 से पुरातत्व विभाग के अधीन है, इससे पूर्व यह वन विभाग के जिम्मे था। पर्यटकों के लिए हवा महल तक जाने के लिए पुरातत्व विभाग ने 1.5 किलोमीटर फुटपाथ बनवाया है। सुरक्षा के लिहाज से लोहे की रैलिंग भी लगायी गयी है। हवा महल के दो रूप हैं, एक कचहरी एवं दूसरा आवासीय महल। इन दोनों महलों का विकास एवं रखरखाव पुरातत्व नियमों के साथ दीवारों, छतों का हेरिटेज लुक बनाये रखने के उद्देश्य के साथ किया जाना चाहिये। प्लास्तर की मजबूती एवं हेरिटेज लुक बनाएं रखने हेतु पूर्व में प्रचलित अनेक सामग्री (मूंग की दाल, मैथी का पेस्ट, गुड़, चना, सुरकी–ईंट का बुरादा) युक्त प्लास्टर, आम प्लास्टर से ज्यादा मजबूत, टिकाऊ होने के साथ, दीवारों का पुराना स्वरूप भी बना रहता है। वर्तमान लोहे के दरवाजों एवं खिड़कियों के स्थान पर, मेवाड़ घरानों के महलों में प्रचलित प्राचीन डिजाइन के लकड़ी से बने हुए प्रतिस्थापित किये जाने चाहिये। रख–रखाव एवं सुरक्षा की उच्च स्तर की व्यवस्था के लिए पर्यटकों से पर्याप्त शुल्क एवं राजस्थान सरकार से नियमित अनुदान विभाग को मिलना चाहिये। महल की अन्दरूनी सुन्दरता को महाराणा जयसिंह काल के अनुसार ही बनाये रखने का भी पूर्ण प्रयास होना चाहिये। महल के साथ उद्यान को फिर से विकसित कर, पर्यटकों के लिए विभिन्न सुविधाओं का भी विकास किया जाना चाहिये।

हवा महल – आवासीय स्थल

हवा महल – कचहरी स्थल

रूठी रानी महल का भीतरी स्वरूप

रूठी रानी महल की छत : झील अवलोकन स्थल

रूठी रानी महल का बाहरी स्वरूप

महल के अन्दर स्थित चौक
जंगली घास से आच्छादित

आवासीय महल एवं कचहरी के विविध भीतरी स्वरूप एवं उनकी वर्तमान स्थिति

सुन्दर एवं पूर्ण वेशभूषा श्रृंगारित हाथी : जयसमन्द पाल पर स्थापित छः बहुत सुन्दर एवं पूर्ण वेशभूषा श्रृंगारित हाथी के चरण पखारने के साथ ही इसके ओवरफ्लो होने का आभास हो जाता है। वर्तमान में पाल पर स्थापित सभी हाथी जर्जर हो रहे हैं। जगह–जगह से टूट गये हैं और इसे बचाने के लिए फिलहाल व्हाइट सीमेन्ट भरने से स्वरूप और बिगड़ने लगा है। हाथी पर मनाई की इबारत उकेर कर उन्हें और भी बदरंग कर दिया गया हैं। स्थानीय लोग एवं पर्यटक इन पर चढ़कर झील में गोता लगाते हैं एवं सेल्फी खींचते हैं। ऐतिहासिक कृति हाथी को नुकसान पहुंचाने वालों, सेल्फी लेने वालों तथा गोता लगाने वालों को रोकने वाला यहाँ पर कोई भी नहीं दिखता है। विशेषज्ञों से तकनीकी जानकारी लेकर एवं चर्चा कर ही इन हाथियों की सुन्दर कृतियों का समुचित रखरखाव एवं जीर्णोद्धार पूर्ण सावधानी एवं पुरातात्विक महत्व को ध्यान में रखते हुए ही किया जाना चाहिये।

छतरियाँ : जगप्रसिद्ध जयसमन्द झील की छः छतरियों को सफेद रंग से पोत दिया गया हैं, जो कि इसके मूल स्वरूप के अनुकूल नहीं है। इसके ऐतिहासिक एवं पुरातत्व महत्व वाले प्रस्तर शिल्प का संरक्षण किया जाना चाहिये। इस पुरातत्व महत्व के स्थल के मूल स्वरूप को बरकरार रखते हुए इसका जीर्णोद्धार किया जाना चाहिये। जयसमन्द की छतरियों पर अव्यवस्थित रंगरोगन (सफेद+नीला) से इसका पुरातात्विक वैभव लुप्त हो गया है। छतरियों की क्यारियों पर लगे फूलदार या स्थायी सुन्दर पौधे या तो सूख गये या कोई ले गया। वर्तमान में यह मात्र कचरा पात्र बनकर रह गयी हैं।

प्रायः यह देखा गया है कि स्थानीय नागरिकों एवं पर्यटकों द्वारा संगमरमर की पाल, सीढ़ियाँ, हाथी, मन्दिर एवं छतरियों की दीवारों पर काले रंग से कुछ भी लिखने का प्रयास किया जाता है, शायद यह अज्ञानवश या अपनी उपस्थिति को दर्शाने के लिए ऐसा करते हैं। इससे इनकी सुन्दरता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इनकी सुरक्षा सीसीटीवी कैमरों एवं सुरक्षा प्रहरियों के माध्यम से की जानी चाहिये। पाल की क्षतिग्रस्त दीवार एवं बदरंग सीढ़ियों के नियमित रखरखाव पर भी ध्यान दिया जाना चाहिये।

विभाग : जल संसाधन, जलदाय, मत्स्य, वन, पर्यटन एवं भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग जयसमन्द झील से संबंधित है। मगर इसके रखरखाव के मामले में किसी एक की भी संपूर्ण जिम्मेदारी नहीं रही, अतः झील की पाल बद से बदतर होती चली गयी। आशा है कि इसके पुरातत्व महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इसका सुनियोजित रूप से रखरखाव के लिए किसी एक विभाग के पास संपूर्ण जिम्मेदारी होनी चाहिये।

पाल पर स्थित महल : पाल के उत्तरी और दक्षिणी छोर पर दो–मंजिला महल एवं दरीखाना बनवाये गये। उत्तरी छोर पर मुख्य महल राजस्थान पर्यटन निगम के होटल के रूप में संचालित है। दक्षिणी छोर पर बने महल का वर्तमान में वन एवं जल संसाधन विभाग कार्यालय, आवासीय व्यवस्था एवं विश्राम स्थल के रूप में उपयोग हो रहा है। इन दोनों महलों का पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप मॉडल के तहत जीर्णोद्धार कराकर पर्यटक सुविधा के लिए विकसित किया जाना चाहिये।

मुख्य पाल पर पार्क : पाल के दक्षिणी छोर की दूसरी छतरी के नीचे दो हाथियों के मध्य स्थित चौकियों पर एक छोटा पार्क बनाया गया है। इस पार्क का पाल पर निर्माण करना झील के पुरातत्व महत्व की दृष्टि से कतई उपयुक्त नहीं है, अतः इस पाल के पुरातन स्वरूप यथावत रखे जाने पर मंथन किया जाना चाहिये।

मिट्टी की पाल पर मुख्य उद्यान : जयसमन्द झील की मुख्य संगमरमर की पाल एवं रिटेनिंग वॉल के मध्य पूर्ण चौड़ाई में मिट्टी भरकर इसे मजबूती प्रदान की गयी। वर्तमान में मिट्टी से भरी गई पाल का पश्चिमी छोर का स्तर पाल की दोनों पक्की दीवारों की सतह से नीचा है। पाल के इस लम्बे गड्ढ़े को राजसमन्द व उदयसागर की भांति मिट्टी से भरने से पाल की मजबूती में भी वृद्धि होगी एवं उच्च स्तर का उद्यान भी विकसित किया जा सकता है।

वर्तमान में पाल पर विकसित उद्यान उच्च स्तर का नहीं है। मौसमी एवं बारहमासी फूलों, सुन्दर पौधों के साथ इसका रखरखाव उच्च स्तरीय होना चाहिये तथा केन्द्रीय म्यूजिकल फव्वारों की स्थापना करना भी अपेक्षित है। रात्रि में पाल, उद्यान एवं फव्वारों की सुरम्य रोशनी से यह क्षेत्र दर्शनीय ही नहीं वरन् पर्यटकों को भी आकर्षित करने वाला हो सकता है।

वाटर स्पोर्ट्स : जयसमन्द झील की बनावट, विशालता एवं टापुओं की उपलब्धता से वाटर स्पोर्ट्स के लिए यह बहुत ही उपयुक्त है एवं इसके विकास की यहां प्रबल संभावनाएँ हैं। छोटे जहाज, पालदार नौकाओं, फ्लोटिंग रेस्टोरेन्ट्स आदि से सुसज्जित करने पर यह झील भी उत्तम पर्यटन स्थल बन सकती है। पर्यटक इनके माध्यम से आसानी से टापुओं पर जाकर ग्रामीण जीवन शैली को प्रत्यक्ष रूप से देखकर आनन्दित होंगे। इससे स्थानीय लोगों को रोजगार भी उपलब्ध हो सकेगा।

नौकायन प्रशिक्षण : एशिया की सबसे बड़ी जयसमन्द झील नौकायन प्रशिक्षण व अभ्यास करने के लिए सबसे उपयुक्त स्थल है। इस झील की लम्बाई एवं अनेक टापुओं के कारण सभी प्रकार के नौकायन प्रशिक्षण विशेषकर नेवल विंग केडेट्स के लिए बहुत व्यवस्थित रूप से आयोजित किये जा सकते हैं। इस आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र से भावी नेवल अधिकारी एवं नाविक तैयार किये जा सकते हैं।

टापू : जयसमन्द में पायरी, भटवाड़ा और बाबा मगरा टापुओं का खासा आकर्षण हैं। बाबा मगरा में जहाँ खेती भी की जाती है, तो दो अन्य टापुओं पर मछुआरें एवं ग्रामीणों के परिवार भी रहते हैं। इन टापुओं पर वन विभाग द्वारा अच्छे ग्रीन हब्स पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए विकसित किये जाने चाहिये। पर्यटक यहाँ पहुँचकर विशाल झील की अथाह जलराशि के सुन्दरतम् दृश्य का आनन्द ले सकेंगे। यहाँ पर पर्यटकों के लिए ट्रेक भ्रमण भी आयोजित किये जाने चाहिये। इस झील के नम भूमि के रूप में चिह्नित होने के कारण किसी भी टापू पर अब और नये रिसोर्ट व होटल्स आदि नहीं बनने चाहिये।

जयसमन्द आइलैण्ड रिसोर्ट : यह रिसोर्ट जयसमन्द झील में 40 एकड़ क्षेत्र में फैले हुए एक निजी बाबा आइलैण्ड पर अवस्थित है। यह रिसोर्ट पाल से 3.5 कि.मी. है। इस रिसोर्ट पर मुख्य पाल से नाव द्वारा पहुँचा जा सकता है। यह रिसोर्ट अपने आप में एक अनोखा है। इन निजी टापुओं पर सघन वृक्षारोपण कर वर्षभर हरियाली रखने के प्रयास प्रतिष्ठान/प्रबन्धन द्वारा किया जाना चाहिये। इन टापुओं पर ट्रेक भ्रमण के साथ घोड़े एवं ऊँट यात्रा की व्यवस्था भी होनी चाहिये।

पार्किंग एवं मूलभूत पर्यटन सुविधाएँ : जयसमन्द झील की पाल पर वाहनों की पार्किंग की सुविधा व्यवस्थित नहीं होने के कारण पाल के आस–पास दो एवं चार पहिया वाहनों को बेतरतीब तरीके से खड़ा कर दिया जाता है। इसी प्रकार सैलानियों को भोजन, चाय–नाश्ता, पेयजल जैसी मूलभूत सुविधाएँ भी नहीं मिल पाती हैं, इन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सैलानियों को अव्यवस्थित रूप से खड़े थैले वालों पर निर्भर रहना पड़ता हैं। यहाँ पर गुणवत्तापूर्ण एवं साफ–सुथरी खाद्य सामग्री नहीं मिल पाने से प्रायः सैलानी हतोत्साहित रहते हैं। सैलानियों को रात्रि विश्राम करने की सुविधाएँ भी वर्तमान में इस झील या आसपास के क्षेत्र में उचित दर पर उपलब्ध नहीं है। पाल के उत्तरी एवं दक्षिणी छोर पर बने महलों को पर्यटकों की मूलभूत सुविधाओं के अनुसार विकसित किये जाने पर विचार किया जाना चाहिये।

झील की सुन्दरता को यथावत रखने हेतु आवश्यक बदलाव : जयसमन्द झील की पाल पर कलात्मक छतरियों, मन्दिर एवं महल के सुन्दर स्वरूप को जलदाय एवं वन विभाग द्वारा कार्यालय, आवासीय भवन, विश्राम स्थल आदि बनाकर पुरातत्व महत्व की इस झील के उच्च स्वरूप को अवरुद्ध कर दिया गया है। ये कार्यालय एवं आवासीय विश्राम स्थल पाल के नीचे तलहटी क्षेत्र पर भी बनाये जा सकते हैं।

जयसमन्द चौराहा : जयसमन्द झील की पाल की चढ़ाई से पूर्व जयसमन्द का मुख्य चौराहा भी बहुत ही अव्यवस्थित रूप से विकसित है। यह चौराहा वर्ष–दर–वर्ष अतिक्रमण के कारण बहुत ही संकुचित होता जा रहा है। इस चौराहे को जयसमन्द के पर्यटन महत्व के हित में अतिक्रमण मुक्त कर सुन्दर फव्वारें, समुचित प्रकाश व्यवस्था आदि के साथ भव्य स्वरूप दिया जाना चाहिये। यहाँ पर पर्यटकों हेतु आधारभूत आवश्यकताओं की सामग्री एवं सुविधाएँ सुगमता से उपलब्ध हो सकें, ऐसी व्यवस्थाएँ विकसित की जानी चाहिये। चौराहे को अतिक्रमण मुक्त करने में स्थानीय व्यापारियों का सहयोग आवश्यक होगा, अतः उन्हें प्रोत्साहित कर भविष्य में उन्हें होने वाले लाभ से अवगत कराना होगा। यहाँ पर मत्स्य विभाग का मछली के बीजों के उत्पादन की उत्तम व्यवस्था है। इसकी ओर पर्यटकों को आकर्षित करने हेतु विशेष प्रयास किये जाने चाहिये।

चौराहे का अव्यवस्थित स्वरूप

पेयजल का मुख्य स्रोत : जयसमन्द झील उदयपुर शहर की पेयजल आपूर्ति का प्रमुख स्रोत है। सराड़ा तहसील, सलुम्बर कस्बे सहित आस–पास के कुछ गांवों में जलापूर्ति इस झील से होती है। इसके लिए पाल की उत्तरी छोर स्थित महल के पास उनके पम्प हाउस बनाये गये। इन पम्प हाउस का स्वरूप दर्शनीय तो नहीं है, काश! मानसी वाकल पेयजल परियोजना की तर्ज पर इस झील का जल भी तलहटी तक ग्रेविटी से लाया जाता, फिर पम्पों द्वारा उदयपुर पहुँचाया जाता। इससे पेयजल आपूर्ति में सरकारी खर्च को काफी हद तक कम किया जा सकता था। यह व्यवस्था अभी भी विकसित की जा सकती है।

जयसमन्द अभयारण्य : जयसमन्द झील के जलग्रहण क्षेत्र में स्थित पहाड़ियों व घाटियों का 52.34 वर्ग किमी वन क्षेत्र अभयारण्य घोषित किया गया है। शीतप्रवास के लिए हजारों प्रवासी पक्षी इस झील पर डेरा डालते हैं। बघेरा, रीछ, जरख, गीदड़, सांभर, चीतल, चिंकारा, जंगली सुअर एवं 112 प्रजातियों के वन्य जीव व पक्षी यहाँ भ्रमण करते हैं। जयसमन्द झील एवं अभयारण्य को एक सर्किट के रूप में जोड़ा जाना चाहिये ताकि पर्यटक झील के साथ जंगल, वन्य जीवों, पक्षियों व ग्रामीण परिवेश के बारे में जान सके। डे टूरिज्म को बढ़ाने के अन्तर्गत पर्यटक दिन में ट्रेकिंग करे, पुरानी ओदी देखें तथा जंगल व जानवरों को जाने। वन विभाग द्वारा पर्यटन विभाग के आर्थिक सहयोग से अभयारण्य के प्रवेश मार्ग पर आकर्षक मुख्य द्वार, वहीं पर आगंतुक कक्ष व टिकिट खिड़की को लुभावना रूप दिया जा रहा है। इको टूरिज्म के तहत इस इलाके में पर्यटकों की सुविधा के लिए कच्चे निर्माण भी किये जा रहे हैं।

कुम्भलगढ़ एवं सज्जनगढ़ अभयारण्यों की तुलना में जयसमन्द अभयारण्य में कम पर्यटक आने की संभावना रहती है लेकिन जहाँ जयसमन्द झील जैसी प्रसिद्ध झील हो, अभयारण्य सघन वृक्षारोपण युक्त, मानवीय अतिक्रमण से मुक्त, चारों ओर ऊँची दीवारों से संरक्षित हो। जंगली जानवरों की संख्या में वृद्धि के साथ उनके लिए उपयुक्त विश्राम स्थलों का प्राकृतिक स्वरूप में निर्माण हो एवं उनके आहार के लिए पर्याप्त संख्या में जानवर होने की नियमित जानकारी रखी जावे या आहार उपलब्ध कराया जाये। अभयारण्य में घास की कटाई पर पाबन्दी हो एवं स्थान –स्थान पर पर्याप्त पानी की व्यवस्था हो। उपरोक्त सुविधायुक्त होने पर, यह अभयारण्य अधिक लोकप्रिय होगा एवं उदयपुर आने वाला प्रत्येक पर्यटक इसे देखे बिना नहीं जायेगा।

अभिव्यक्ति : जयसमन्द की विशाल झील की अथाह जल राशि के मध्य में स्थित टापू, पाल पर स्थित पुरातत्व महल, प्राचीन मन्दिर, सुन्दर मार्बल की छतरियाँ, संगमरमर की सीढ़ियाँ एवं चौकियाँ तथा कुछ पर स्थित श्रृंगारित हाथियों का पूर्ण जल भराव क्षमता पर जो अलौकिक दृश्य दिखाई पड़ता है, वह अतुलनीय है। इसी के साथ पाल के दक्षिणी छोर पर ऊँची पहाड़ियों पर हवा महल, रूठी रानी महल, जय महल, घना जंगल, वनभ्रमण पथ आदि स्थित हैं। वाटर स्पोर्ट्स, नौकायन, टापुओं के भ्रमण के साथ, पाल से कुछ दूरी पर स्थित जयसमन्द अभयारण्य को भी हम सम्मिलित करें तो यह स्थल पर्यटन की दृष्टि से अत्यन्त ही लोकप्रिय बनाया जा सकता है। वर्तमान में पर्यटकों को यहाँ पर एक से दो घंटे निकालने भी भारी पड़ते हैं, वहीं पर्यटकों को उक्त सभी स्थलों को एक दिन में भी देखना संभव नहीं होगा। झील की ऐतिहासिक धरोहर, पुरातत्व महत्व एवं विशालता को देखने की दृष्टि से इसका पूरा विकास नहीं हुआ है। सभी विभागों को झील के प्रति अपना–अपना मोह छोड़ कर मात्र पर्यटकों के प्रति समर्पित इस अद्वितीय सुन्दर झील को निखारने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देना चाहिये।